सर्वोदय दर्शन की युगीन प्रासंगिकता

*राधाकिशन

सर्वोदय का महान विचार गाँधी के अन्तरतम में प्राचीन भारतीय दर्शन, जैसे बुद्ध और जैन दर्शन तथा अन्य धर्मग्रन्थों जिनमें गीता मुख्य थी आदि का समन्वय करते हुए पनप रहा था। किन्तु इस विचार को वे अधिक परिष्कृत करने में लगे हुए थे ऐसे वक्त में उनके हाथ ऐसी कृति आयी जिसने इस विचार को पूर्णता प्रदान कर दी। यह कृति थी जॉन रस्किन की 'अन दु दिस लास्ट'। अपने मित्र पोलक द्वारा भेंट इस कृति का उन्होंने डरबन यात्रा के दौरान अध्ययन किया। उन्होंने स्वंय इस पुस्तक के बारे में लिखा है ''जो थोड़ी पुस्तकें मैं पढ़ पाया हूँ कहा जा सकता है कि उन्हें मैं ठीक से हजम कर सका हूँ। इन पुस्तकों में जिसने मेरे जीवन में तत्काल महत्व के रचनात्मक परिवर्तन कराये वह 'अन टु दिस लास्ट' ही कही जा सकती है।''[1] गाँधी ने अपने 24 घंटे के इस सफर में इस कृति को सम्पूर्ण रूप से आत्मसात किया और इसे अमल में लाने का प्रण कर लिया। बाद में इसका उन्होंने गुजराती में अनुवाद किया जिसका नाम उन्होंने सर्वोदय रखा है। यदि इस पुस्तक का शब्दशः हिन्दी में अनुवाद किया जाए इसका अर्थ होगा 'अत्योदय', किन्तु गाँधी ने इसको सर्वोदय कहा, शीर्षक से उनका प्रभाव इस पर स्पष्ट हो जाता है। अतः उन्होंने इसे सर्वोदय में बदल कर रस्किन की आशा को और अधिक व्यापक बना दिया।

सर्वोदय क्या है ?

यदि सर्वोदय का सन्धि विच्छेद किया जाए तो इसे सर्व + उदय में व्यक्त किया जा सकता है, जिसका सीधा सा अर्थ है सबका भला। अतः इस अवधारणा के माध्यम से गाँधी सभी व्यक्तियों का बिना किसी भेदभाव के कल्याण चाहते है। यह इस विचार को लेकर चलती है कि प्रत्येक व्यक्ति का भला तब ही हो सकता है जब कि समाज के सम्पूर्ण सदस्यों का कल्याण हो चूंकि प्रत्येक व्यक्ति उस समाज का सदस्य होता है इसलिए उसका कल्याण सबके कल्याण में ही निहित है। यह विचारधारा मूलभूत रूप से ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तू निरामया'' की भावना को लेकर चलती है। दादा धर्माधिकारी के अनुसार ''सर्वोदय से तात्पर्य है कि सबका उदय, सबका उत्कर्ष, सबका विकास'' इस प्रकार सर्वोदय एसी अवधारणा है जो सबका भला एवं विकास चाहती है। वे आगे लिखते हैं, ''सर्वोदय शब्द भले ही नया हो किन्तु इसका अर्थ सबका जीवन साथ–साथ सम्पन्न हो उतना ही नहीं है। जीवन का अर्थ है विकास, अभ्यूदय या उन्नति। सगका सहविकास हो। परन्तु प्राचीन समय में 'अभ्यूदय' शब्द का प्रयोग एतिहासिक वैभव के अर्थ तक ही सीमित था इसलिए गाँधी ने केवल 'उदय' शब्द का ही प्रयोग किया–एक साथ समान रूप से सबका उदय हो, यही सर्वोदय का उद्देश्य है।''[2] बी. कुमारप्पा के अनुसार ''सर्वोदय से आशय है सबका भला। राजा तथा किसान, हिन्दू एवं मुसलमान, छूत–अछूत, गोरे–काले, सन्त एवं पापी सभी बराबर होगें, कोई भी दल अथवा व्यक्ति किसी भी दल अथवा व्यक्ति का दमन अथवा शोषण नहीं करेगा। सर्वोदय समाज में सभी सदस्य समान होगें प्रत्येक को उनके परिश्रम का उचित प्रतिफल मिलेगा। सबल व्यक्ति समाज के निर्बल व्यक्तियों की रक्षा तथा उसकी संरक्षमता का कार्य करेंगें इस प्रकार सभी व्यक्ति सबका भला करने में सहायक होगें।''[3]

इस प्रकार सर्वोदय का अर्थ है ''सर्वभूत हिताय''। गीता में सर्वोदय का अर्थ सर्वभूतों के हितों में रत होने का इसी तरह सर्वोदय व समाजवाद में भी साम्य नहीं है सत्य है दानों वर्गविहीन व शोषण विहिन समाज रचना चाहते हैं किन्तु लक्ष्य प्राप्ति के साधनों में गहरा अन्तर है। नैतिकता के लिए समाजवाद में कोई स्थान नहीं है, जबकि गाँधी सर्वोदयी अवधारणा द्वारा अध्यात्मिक एवं नैतिक आदर्शों को अपनाना चाहते है। सर्वोदय प्रत्येक व्यक्ति के नैतिक जागरण व अन्तःशुद्धि पर आधारित है। यह सत्य अहिंसा प्रेम ब्रह्मचर्य, अभय, अपरिग्रह, संयम, आत्मत्याग, शरीर श्रम, स्वदेशी, सर्वधर्म सम्भाव आदि गुणों की प्रतिस्थापना करता है। अतः जो विचारधारा सत्य, अहिंसा, प्रेम, आत्मत्याग आदि के आधार पर सबका भला करना चाहती है चाहे वह काला को या गौरा चाहे स्पृश्य हो या अस्पृश्य, चाहे मजदूर हो या मालिक, चाहे गरीब हो या अमीर, चाहे संत हो पापी आदि वही सर्वोदय है।

सर्वोदय के मूल सिन्द्धान्त

गाँधी के शब्दों में ''मेरा यह विश्वास था कि जो चीज मेरे अन्दर गहराई में छिपी पड़ी थी रस्किन के ग्रन्थ रत्न में मैंने उसका स्पष्ट प्रतिबिम्ब देखा। और इस कारण उसने मुझ पर अपना साम्राज्य जमाया और मुझसे उसमें दिए गए विचारों पर अमल करवाया।''[4] इन विचारों के आधार पर गाँधी ने निम्न तीन सिन्दातों को बताया–

(अ) सबकी भलाई में हमारी भलाई निहित है : चूंकि मनुष्य समाज का स्वभाविक सदस्य होता है अतः जब वह सबके कल्याण की बात सोचेगा तो उसका कल्याण स्वतः ही हो जाएगा। उसका समाज से हटकर या अलग रहकर कोई कल्याण नहीं हो सकता। डॉ. कमला द्विवेदी के अनुसार ''व्यक्ति की सामाजिक चेतना उसे सामुदायिक हितों के प्रति संवेदनशील बनाती है। हितों के व्यक्तिपरक व समुदाय परक चेतना में समन्वय रखना तथा व्यक्तिगत स्वार्थों एवं सामाजिक हितों को संश्लिष्ट रखना सर्वोदय का मुख्य आधार है। इसके बिना सर्वोदय सम्भव नहीं है।''[5] अतः जब सबकी भलाई होगी तो स्वंय की भलाई स्वतः ही हो जायेगी।

(ब) बुद्धि व श्रम के कार्यों की कीमत एक समान होनी चाहिए : यह एक अत्यन्त क्रान्तिकारी और विवादग्रस्त सिद्धान्त है। इसके अन्तर्गत गाँधी मानते हैं कि इस आधार पर कार्यों में भेद नहीं किया जाना चाहिए कि कोई कार्य बौद्धिक है अथवा शरीर श्रम द्वारा किया गया है। वस्तुतः सभी कार्य समान महत्व रखते हैं। उनका मानना है कि वकील और नाई दोनें के काम की कीमत एक सी होनी चाहिए क्योंकि आजीविका का अधिकार सबको एक समान है। अर्थात समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान आदर मिलना चाहिए। शारीरिक श्रम और बौद्धिक श्रम जो समाज के लिए हो उसे समान भाव से देखा जाना चाहिए। कमला द्विवेदी के अनुसार ''वास्तव में मानव जाति का इतिहास उस शोषण की कला है जिनमें बुद्धियुक्त मनुष्य ने उन लोगों का शोषण किया जिनमें बुद्धि कम थी। उस पारिवारिक भावना का बुद्धिजीवियों ने परित्याग किया, जिसके आधार पर परिवार के प्रत्येक व्यक्ति को उसकी क्षमता चाहे जैसी हो, समान सम्मान मिलता था। ज्ञान और कर्म के बीच द्वन्द्व में एक को ऊँचा समझना और दूसरे को नीचा, यह सर्वोदय के सिद्धान्त के विपरीत है।''[6]

(स) श्रमजीवी का जीवन ही सच्चा जीवन है : गाँधी ने माना कि सादा मेहनत मजदूरी और किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है। सर्वोदय तभी सम्भव हो सकता है जबकि प्रत्येक व्यक्ति आत्म संयम को अपनाए और श्रम की नैतिकता का आत्मज्ञान करे। इसको उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए व्यावहारिक तौर पर क्रियान्वित किया, जहां डरबन में उन्होंने फिनीक्स ग्राम बनाया जो कि सर्वोदय ग्राम की एक व्यवहारिक क्रियान्विति थीं यहां का प्रत्येक सदस्य किसान था। ज्यादातर कार्य व्यक्ति–श्रम द्वारा सम्मपन्न किये जाते थे इसमें सभी जाति एवं धर्मों के व्यक्ति थे, अतः यह एक सच्चा सर्वोदय आश्रम का प्रतीक था। जहां सबका उदय करने की कोशिश की गई।

इन सिद्धान्तों के बारे में गाँधी ने लिखा है ''पहली चीज मैं जानता था दूसरी को मैं धुंधले रूप में देखता था। तीसरी का मैंने कभी विचार नहीं किया था। 'सर्वोदय' ने मुझे दीये की तरह दिखा दिया कि पहली चीज में दूसरी दोनों चीजें समायी हुई है'' इस प्रकार गाँधी ने शारीरिक श्रम की प्रतिष्का रस्किन से सीखी। वी. शीन ने लिखा है, ''आदर्श व व्यावहारिकता के मध्य अनोखे समन्वय का भाव गांधी ने पुस्तक (अन दु दिस लास्ट) से ग्रहण किया। और जो विचार आवश्यक रूप से उनकी आन्तरिक प्रकृति के सबसे अधिक भाता था वह है सहकारी श्रम की धारणा।''[7] अतः शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा को महत्व देने के सन्दर्भ में गाँधी ने रस्किन को काफी पीछे छोड़ दिया। जहां रस्किन ने व्याख्यान व पेंटिग को रोटी के लिए श्रम में सम्मिलित कर लिया वहीं गांधी ने व्याख्यान पेटिंग व सम्पदाकीय कार्य के अतिरिक्त कुद शारीरिक श्रम को रोटी के लिए आवश्यक माना है।

सर्वोदय के आध्यात्मिक आधार

गाँधी का मानना है कि साध्य की पवित्रता के लिए साधनों की पवित्रता अति आवश्यक है। गाँधी के अनुसार ''ध्येय की सबसे स्पष्ट व्याख्या और उसकी कद्रदानी से भी उस ध्येय तक नही पहुँच सकेगें, अगर हमें उसे प्राप्त करने के साधन मालूम नहीं हो और हम उसका उपयोग नहीं करेंगे। इसलिए मुख्य चिन्ता साधनों की रक्षा की और उनके अधिकाधिक उपयोग की है। मैं जानता हूँ कि ध्येय की और हमारी प्रगति ठीक उतनी ही होगी, जितने हमारे साधन शुद्ध होगें।''[8] इस प्रकार साधनों की शुद्धता पर ही साध्यों की पवित्रता निर्भर करती है। जिस प्रकार बबूल का पेड़ उगाकर आम प्राप्त नहीं किये जा सकते उसी प्रकार

अपवित्र साधनों से पवित्र साध्य कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता। अतः गाँधी ने सर्वोदय जैसे पवित्र साध्य को प्राप्त करने के लिए साधनों की पवित्रता का पर्याप्त ध्यान रखा और निम्न साधनों का निरूपण किया। इन्हें सर्वोदय की प्राप्ति के आध्यात्मिक आधार भी कहा जा सकता है।

सत्य

गाँधी के अनुसार सत्य शब्द 'सत्' से बना है और 'सत्' का अर्थ है अस्ति सत्य अर्थात् अस्तित्व। सत्य के बिना दूसरी किसी चीज की हस्ती ही नहीं है। परमेश्वर का सच्चा नाम ही 'सत्' अर्थात् 'सत्य' है। इसलिए परमेश्वर 'सत्य' है यह कहने की अपेक्षा 'सत्य' ही परमेश्वर है कहना अधिक योग्य है।[9] इस सत्य की आराधना के लिए ही हमारा अस्तित्व, इसी के लिए हमारी प्रत्येक प्रवृत्ति और इसी के हमारा प्रत्येक श्वासोच्छवास होना चाहिए। ऐसा करना सीख जाने पर दूसरे सब नियम का शुद्ध पालन अशक्य है। अतः सर्वोदय समाज के व्यक्तियों के लिए सत्यवादी होना आवश्यक है यहां सत्य केवल सच बोलना मात्र ही नहीं है बल्कि गाँधी ने इसका प्रयोग विशाल अर्थ में किया। विचार में वाणी में और आचार में सत्य होना ही सत्य है इस सत्य को सम्पूर्णतः समझने वालों के लिए जगत में और कुछ जानना बाकी नहीं रहता। क्यों कि सारा ज्ञान उसमें समाया हुआ है।

अहिंसा

ईसाई, जैन, हिन्दु आदि धर्मों में अहिंसा की धारणा काफी पहले से प्रचलित है। महाभारत में तो अहिंसा को परम धर्म कहा गया है। परम्परागत रूप से प्रचलित अहिंसा की अवधारणा एक नकारात्मक अवधारणा थी जो कहती है कि, किसी भी जीव को शारीरिक कष्ट नहीं पहुँचाना चाहिए। गाँधी अहिंसा की इस अवधारणा को स्वीकार करते हुए अपनी सकारात्मक अहिंसा की अवधारणा अहिंसा की अवधारणा का प्रतिपादन किया। उन्होंने कहा प्रत्येक प्राणी से प्रेम करना ही अहिंसा है। किसी भी जीव मात्र को न केवल शारीरिक तौर पर बल्कि मानसिक तौर पर कष्ट नहीं पहुँचाना ही अहिंसा है। यहां गाँधी सभी परिस्थितियों में सभी प्राणियों के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा अहिंसा का प्रतिपादन करते है। किन्तु वे पूर्णतः अहिंसा को असम्भव मानते हैं क्योंकि हमारा जीवन किसी न किसी रूप में हिंसा पर आधारित है। जाने अनजाने में हम स्थूल हिंसा किये बिना जी ही नहीं सकते है अतः पूर्ण अहिंसा असम्भव है।

सत्य और अहिंसा आपस में इस तरह जुड़े हुए हैं कि इन्हें अलग नहीं किया जा सकता। गाँधी ने स्वंय कहा है कि उन्होंने अहिंसा को सत्य की राह में पाया जिसके बिना सत्य की खोज असम्भव थी। अतः इन्हें एक दूसरे से अलग करना असम्भव है। यहां भारतन कुमारप्पा का यह कथन प्रासांगिक है कि ''अहिंसा के बिना सत्य को खोजना एवं पाना असम्भव है। अहिंसा व सत्य व्यावहारिक रूप में इस तरह अन्तसम्बन्धित होते हैं इन्हें अलग करना असम्भव है। वे सिक्के के दो पहलूओं के समान है अथवा किसी चिकनी परत के दो पहलूओं के समान है। कौन कह सकता है कि इसमें कौनसा पहलू उल्टा और कौन सा सीधा है।''9 फिर भी अहिंसा साधन है और सत्य साध्य। इस तरह अहिंसा सर्वोदय के लिए अत्यावश्यक आधार है जिसके द्वारा ही व्यक्ति कल्याण की ओर अग्रसर हो सकता है।

ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्य की परम्परागत अर्थों में सकुंचित व्याख्या की गई है जिसमें जननेन्द्रिय विकास के निरोध भर को ही ब्रह्मचर्य का पालन मान लिया गया है। लेकिन गाँधी के अनुसार यह व्याख्या अधुरी और गलत है कि विषय मात्र का निरोध ही ब्रह्मचर्य है। निसन्देह जो अन्य इन्द्रियों को यहाँ–वहाँ भटकने देकर एक ही इन्द्रि को रोकने का प्रयत्न करता है वह निष्फल प्रयत्न करता है। कान से विकारी बातें सुनना, आँख से विकार उत्पन्न करने वाली वस्तु देखना, जीभ से विकारोत्तेजक वस्तु का स्वाद लेना, हाथ से विकारों को उभारने वाली चीज को छूना और फिर भी जननेंद्रिय को रोकने का इरादा हम सब इन्द्रियों को एक साथ वश में करने का अभ्यास डालें तो अननेन्द्रिय को वश में रखने का प्रयत्न तुरन्त सफल हो सकता है।''[10]

अस्वाद

गाँधी के अनुसार सर्वोदय समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपने कल्याण के लिए भोजन के बारे में सावधान रहना होगा विशुद्ध भोजन ग्रहण करना होगा। अनावश्यक खाद्य पदार्थों का धीरे–धीरे बहिष्कार करना होगा। जीभ पर नियंत्रण रखना होगा और भोजन स्वाद के लिये नहीं जठराग्नि को शांत करने के लिए नियंत्रित रूप से किया जायेगा।

अस्तेय (चोरी न करना)

यहां केवल दूसरों की सम्पत्ति का ही प्रश्न नहीं है। हमें जिस चीज की जरूरत नहीं उसका व्यवहार भी चोरी है। यहां गाँधी ने मानसिक, भौतिक, वैचारिक चोरी का जिक्र किया है। अतः सभी व्यक्तियों का कल्याण तभी हो सकता है जबकि वे चोरी न करें।

अपरिग्रह (संग्रह न करना)

उपयोग न करना ही काफी नहीं है, जो कुछ हमारी शारीरिक आवश्यकता के लिए नितांत आवश्यक नहीं है, उसे भी अपने पास न रखना चाहिए। जो कुछ बचा रहे, उसे ओरों के लिए छोड़ देना चाहिए जीवन को सरल बनाना चाहिए तब सर्वोदय सम्भव हो सकता है।

अभय

जो डरेगा वह पहले के निर्देशों का पालन न कर सकेगा सब प्रकार के भय से मुक्ति पानी होगी। राजा के भय से, जाति के भय से, परिवार के भय से, मनुष्य और हिंसक पशुओं के भय से, जाति के भय से और मृत्यु के भय से। यहांाय मुक्त होने के मायने यह नहीं कि तलवार लटका ली जाये। गाँधी के अनुसार ''तलवार शूरता का चिन्ह नहीं बल्कि भीरूता की निशानी है।''[11] अतः रोमॉ रोला के कथनानुसार निर्भयता को परिभाषित किया जा सकता है, ''जो व्यक्ति निर्भय है वह 'सत्य और आत्मा की शक्ति' से अपनी रक्षा करता है।''[12]

स्वदेशी

स्वदेशी का अर्थ गाँधी के लिए व्यक्ति द्वारा उसके समीपस्थ वातावरण के प्रति निज धर्म का निर्वाह है। इस मत के अनुसार अपने देश के धर्म इसकी भाषा, राजनीतिक पद्धति और उपयोग की वस्तुओं को अंगीकार करना आवश्यक माना जाता है। सर्वोदय के इस साधन को उन्होंने व्यापक अर्थों में लिया है। इसमें स्वार्थ के लिए कोई स्थान नहीं है और न यह घृणा का सिद्धान्त है, यह निःस्वार्थ सेवा का सिद्धान्त है जिसकी जड़ें विशुद्ध अहिंसा एवं प्रेम में है। अतः सर्वोदय का यह भी एक आवश्यक आधार है।

कायिक श्रम

सर्वोदय का जो सबसे महत्वपूर्ण साधन और आधार है वह कायिक श्रम। इसलिए यह फिनिक्स में सबके लिए अनिवार्य किया गया। यह विचार गाँधी ने टॉल्स्टॉय, रस्किन एवं बाइबिल आदि से ग्रहण किया। गाँधी ने इस भागवद् गीता के तीसरे अध्याय में भी देखा जिसमें कहा गया है यज्ञ के बिना खाने वाला चोरी का अन्न खाता है यहां यज्ञ का अर्थ कायिक श्रम या रोटी के लिए श्रम की ही शोभा देता है। कायिक श्रम, ब्रेड लेबर का हिन्दी अनुवाद है। जिसका गाँधी ने शब्दशः अनुवाद किया रोटी के लिए श्रम अतः उनका मानना है कि सबका उदय तभी सम्भव है जबकि प्रत्येक व्यक्ति रोटी के लिए श्रम करे, चाहे वह अमीर हो चाहे गरीब।

इन साधनों के अलावा गाँधी सर्वोदय के लिए दो अन्य आधार भी बताये है ये है–सर्वधर्म समभाव एवं अस्पृश्ता निवारण, सर्वोदय समाज के व्यक्ति के लिए इन दोनों आधारों का पालन भी अनिवार्य है। इस प्रकार सभी व्यक्तियों का कल्याण तभी हो सकता है जब व्यक्ति उर्पयुक्त व्रतों का पालन करें। उनको जीवन में अपनाये तथा प्रत्येक व्यक्ति से वैसा ही प्रेम करें जैसा वह स्वंय से करता है।

सर्वोदय समाज का स्वरूप

1.राज्यविहीन समाज की स्थापना :– सर्वोदय के आधार पर सबके कल्याण के लिए जिस समाज की स्थापना होगी वह राज्य से मुक्त होगा। जय प्रकाश नारायण के अनुसार ''सर्वोदय स्वीकार करता है कि मानव की आत्मा पवित्र है। वह स्वतंत्रता, समानता, न्याय तथा भ्रातृत्व के आदर्शों को अत्यधिक महत्व देता है। इसलिए वह राजव्यवस्था का विरोधी है।''[13] गाँधी टॉल्स्टॉय की भांति ही राज्य के विरोधी थे वे प्रत्येक मनुष्य का कल्याण चाहते थे इसलिए उन्होंने ऐसे स्वराज्य का समर्थन किया जिसमें मनुष्य स्वयं अपने आत्मबल एवं बुद्धिबल द्वारा सत्य एवं अहिंसा का पालन करते हुए स्वयं पर नियंत्रण रखे। इस प्रकार जब प्रत्येक व्यक्ति का स्वयं पर नियंत्रण और शासन होगा तो राज्य की आवश्यकता ही कहां रह जायेगी अतः सर्वोदय समाज एक राज्यमुक्त समाज होगा।

2. आधुनिक प्रजांतत्र और दलीय व्यवस्था के विरूद्ध :– सर्वोदय का दर्शन राजनतिक दलों के खिलाफ है क्योंकि आधुनिक राज्यों में राजनीतिक दलों के कार्यकलाप का मुख्य उद्देश्य शक्ति प्राप्त करना होता है। और उसके लिए वे निर्मम संघर्ष चलाते है। ये शक्ति पाकर बुरे भोंडे कुत्सित विकृत तरीकों का प्रयोग करते है और भ्रष्टाचार का पोषण करते है। व्यवहार में प्रतिनिधि लोकतंत्र मंत्रिमण्डल का अधिनायकत्व और दल का भ्रष्ट शासन होता है। 'सर्वोदय' का उद्देश्य दलीय व्यवस्था को समाप्त कर दलविहीन व्यवस्था के आधार पर सच्चे लोकतंत्र की स्थापना करना है। इसके लिए आचार्य विनोबा ने ग्राम पंचायतों के दलीय स्वरूप को समाप्त कर उन्हें शक्तिशाली बनाने तथा बहुमत के स्थान पर सर्वसम्मत निर्णय के सिद्धान्त को अपनाने का सुझाव दिया। विनोबा के आधारभूत प्रजातंत्र का जो सिद्धान्त प्रस्तुत किया है उसके अनुसार केवल ग्राम पंचायतें, तहसील पंचायतों के सदस्यों का तथा तहसील पंचायतें जिला पंचायतों के सदस्यों का चुनाव करेंगी। राज्य तथा केन्द्रीय प्रशासन का गठन भी इसी आधार पर होगा। प्रत्यक्ष निर्वाचन केवल ग्राम और नगर पंचायतों के सदस्यों का ही होगा तथा अन्य स्तरों पर सदस्यों को निर्वाचन परोक्ष रूप से होगा। साथ ही मतदाता और प्रतिनिधि के लिए योग्यता के रूप में यह आवश्यक होगा कि वह शारीरिक श्रम से निर्वाह करने वाला अथवा पर्याप्त समय राष्ट्र की सेवा में लगने वाला हो।

3. विकेन्द्रीकरण और ग्राम स्वराज्य :– गाँधी हर प्रकार की शक्ति संचय के विरूद्ध थे, इसलिए उन्होंने राजनीतिक और आर्थिक दोनों ही स्तरों पर विकेन्द्रीकरण का समर्थन किया। ''राजनीतिक सत्ता के विकेन्द्रीकरण से सर्वोदय का तात्पर्य स्थानीय संस्थाओं को अधिक से अधिक बलशाली बनाना एवं स्वायत्त शासन की स्थापना करना है। यह कार्य ग्राम एवं नगर पंचायतों द्वारा किया जायेगा।''[14] आर्थिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण करना भी सर्वोदय का लक्ष्य है। आर्थिक विकेन्द्रीकरण से सर्वोदय का अर्थ उत्पादन के साधनों पर स्वयं उत्पादकों के अधिकार से है। यह कुछ–कुछ साम्यवादी दृष्टिकोण के समान दिखाई पड़ता है किन्तु यह पूर्णतः आध्यात्मिकता पर आधारित है जबकि साम्यवाद भौतिकता पर। यह धनवान व्यक्तियों से सम्पत्ति को छीनता नहीं बल्कि उनके हृदय परिवर्तन का प्रयास करता है इसके लिए गाँधी ने एक नया सिद्धान्त दिया जिसे उन्होंने ट्रस्टीशिप कहा है। जिसमें प्रत्येक धनी व्यक्ति अपनी सम्पत्ति का ट्रस्टी होगा और उस धन का उपयोग समाज कल्याण के लिए करेगां इस प्रकार जनार्दन पाण्डे के अनुसार सर्वोदय का आधारभूत नियम यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार कार्य करे तथा आवश्यकतानुसार प्राप्त करे।''[15]

सर्वोदय ग्राम स्वराज्य की स्थापना से ही सम्भव हो सकता है जिसके लिए उपर्युक्त विकेन्द्रीकरण अत्यन्त आवश्यक है वी.पी. वर्मा के अनुसार, ''सर्वोदय की धारणा के अनुसार ग्रामराज का आदर्श तभी साक्षात्कृत किया जा सकता है जब सम्पूर्ण राजनीतिक सत्ता का प्रयोग ग्रामवासी स्वंय करें और जनता द्वारा प्रशासन का यही सिद्धान्त जिला तथा प्रान्त के स्तर पर व्यवहृत किया जाना चाहिए।''[16] अतः ग्राम स्वराज भी गाँधी की एक महत्वपूर्ण देन है जो सर्वोदय के लिए अत्यंत आवश्यक विशेषता है।

अतः प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्येक व्यक्ति के उदय के लिए स्वेच्छा पूर्वक सेवाभावी और आत्मत्यागी होना जरूरी है, प्रत्येक व्यक्ति उसकी नजरों में समान होगा और अस्पृश्यता जैसे कुष्ठ को वह समाज से मिटाने का प्रयास करेगा। अपने कर्तव्यों का पालन वह किसी दबाव में नहीं बल्कि स्वयं की आत्म प्रेरणा से करेगा तभी सर्वोदय अर्थात सबका कल्याण हो सकेगा।

सर्वोदय द्वारा मार्क्सवाद एवं उपयोगितावाद का खण्डन

मार्क्सवाद और उपयोगितावाद दोनों ही विचारधाराऐं व्यक्तियों के कल्याण से जुड़ी हुई है मार्क्सवाद वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए उस मजदूर वर्ग के कल्याण की बात करता है जो सदियों से बुर्जुआ वर्ग के शोषण का शिकार होता रहा है। इसके लिए वह हिंसा को मुख्य रूप से प्रतिष्ठित करता है और मजदूरों को सलाह देता है कि वे हिंसक क्रान्ति द्वारा बुर्जुआ वर्ग को नष्ट कर दे। इसमें मार्क्स मजदूरों की अधिनायकशाही स्थापना की बात करता है, तत्पश्चात् वह राज्यविहीन वर्ग विहीन समाज की कल्पना करता है। यद्यपि सर्वोदय भी राज्य विहीन समाज की स्थापना की बात करता है किन्तु यह मार्क्सवाद के एकदम विपरीत प्रत्येक व्यक्ति के कल्याण की विचारधारा है। इसमें किसी प्रकार के वर्ग संघर्ष की बात नहीं बल्कि वर्गों को आपस में जोड़ा जाकर सांमजस्य की बात की जाती है। यहां अमीर वर्ग का नाश नहीं किया जाता बल्कि उनका सत्य, प्रेम एवं अहिंसा के आधार हृदय परिवर्तन किया जाता है ताकि वे अपनी सम्पत्ति का उपयोग समाज के हित में प्रत्येक व्यक्ति के साथ बांटकर करे। इस प्रकार यह विचारधारा पवित्र साध्यों के लिए पवित्र साधनों की बात कहते हुए ऐसी नैतिक और आध्यात्मिक क्रान्ति करना चाहती है जिससे शांतिमय सामाजिक पुनर्निर्माण का कार्य सम्पादित किया जा सके।[17]

बेन्थम का उपयोगितावाद 'अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख' की बात करती है जो केवल भौतिक सुखों पर ही ध्यान देती है जबकि गाँधी इस विचाराधारा के माध्यम से अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख की विचारधारा का खण्डन करते हुए सभी व्यक्तियों के आत्मिक सुख की बात करते हैं। दूसरे उपयोगितावाद सुखों का ध्यान केवल भौतिक रूप से रखता है अर्थात् वह केवल शारीरिक सुखों की प्राप्ति की बात कहता है जिसमें उसे आत्मिक सुख से कोई लेना देना नहीं है जबकि गाँधी की यह विचारधारा सम्पूर्ण जगत का आत्मिक कल्याण कर उनके ह्रदय को शुद्ध एवं आध्यात्मिक बनाना चाहती है। जिसमें किसी भी व्यक्ति के मन में कोई विकार न हो। व्यक्ति आत्म त्याग, सेवा, बलिदान, परस्पर सांमजस्य, सत्य प्रेम और अहिंसा के आधार पर एक दूसरे का सहयोग करते हुए अपना कल्याण सभी व्यक्तियों के कल्याण में समझे जिससे सम्पूर्ण समाज आत्मिक सुख प्राप्त करे।

उपर्युक्त आधार पर गाँधी ने मार्क्सवाद और उपयोगितावाद को सर्वोदय के सामने बौना बना दिया गाँधी बहुमत के शासन के खिलाफ भी थे, इसके स्थान पर सर्वसम्मति के सिद्धान्त को स्थापित करना चाहते थे। वी.पी. वर्मा के अनुसार, ''यदि सत्य को सर्वोच्च सिद्धान्त माना जाए तो ऐसी स्थिति में बहुमत के आधार पर नहीं बल्कि सर्वसम्मति के आधार पर कार्य करना होगां विवाद और विचार विमर्श आवश्यक है, किन्तु अन्त में तर्क और वितर्क द्वारा पारस्परिक सद्भावना आधारभूत मतैक्य अवश्य प्रकट हो जायेगा।''[18] अतः गाँधी सिर गणना पद्धति के विरूद्ध है और सर्वसम्मति से प्राप्त निर्णयों को ही सर्वोदय समाज के लिए उचित मानते हैं।

मानव कल्याण की जो अखण्ड ज्योति महात्मा गाँधी द्वारा जलायी गयी उसे विनोबा और जयप्रकाश ने आगे जलाये रखा और सर्वोदय को सिद्धान्त रूप से व्यावहारिक बना दिया तथा भारत को सर्वोदय समाज की स्थापना की ओर अग्रसर किया किन्तु अफसोस सर्वोदय समाज की यह कल्पना एक कल्पना ही रह गयी और सर्वोदय आन्दोलन फीका पड़ गया। विनोबा ने इसके लिए जो भू–दान, ग्राम–दान, और सम्पत्ति आन्दोलन चलाए वे विनोबा के चले जाने के बाद अधूरे ही रह गए। किन्तु विनोबा और जय प्रकाश नारायण ने यह सिद्ध कर दिया है कि सर्वोदय कोरी कल्पना नहीं है बल्कि इसे व्यवहार में भी क्रियान्वित किया जा सकता है किन्तु यह बिडम्बना ही रही कि विनोबा और जय प्रकाश नारायण अपना ऐसा कोई उत्तराधिकारी नहीं छोड़ सके जो कि इस आन्दोलन को गति दे, फिर भी उनके द्वारा चलाये गये आन्दोलन की उपलब्धियाँ कम नहीं है, इसकी उपलब्धियों को इस प्रकार गिनाया जा सकता है–

1. यह विचारधारा भौतिक सुख की अपेक्षा उस सुख की बात करती है कि वास्तविक सुख है। ये ही वह सुख है जो मनुष्य को सही रूप से सुखी बना सकता है। इसे उन्होंने आत्मिक कल्याण कहा है। यह कल्याण किसी एक व्यक्ति का नहीं होगा बल्कि समाज के सम्पूर्ण व्यक्तियों का बिना किसी जाति, वर्ण और वर्ग भेद के होगा। अतः इसका लक्ष्य इतना शुद्ध है कि इसे पाने में कुछ समय अवश्य लग सकता है किन्तु यह असम्भव नहीं है।

2. आज जब विश्व परमाणु के ढेर पर बैठा है जो कभी भी एक धमाके के साथ उड़ सकता है ऐसे ये यह अवधारणा आशा की एक किरण है जो सम्पूर्ण विश्व के लिए सत्य अहिंसा और प्रेम को पोषित करती है जिससे प्रत्येक व्यक्ति का कल्याण हो सके।

3. यह अधिकारों की बात न करके कर्तव्यों की बात करती है जिससे समस्त संघर्षों का अन्त स्वतः ही हो जाता है। यह कुछ छीनने के बजाय देने की बात करती है, आत्मत्याग, परसेवा और आत्मबलिदान इसकी मुख्य विशेषताऐं हैं अतः यह व्यक्तियों को जीने की एक नयी पद्धति सिखाती है जो कि हिंसा और अन्याय से मुक्त है।

4. सर्वोदय समाज ही एक सच्चा लोकतंत्र हो सकता है क्योंकि इसमें सिरों की गणना की बजाय सर्वसम्पत्ति से निर्णय लिये जाएगें और प्रत्येक व्यक्ति के मत का महत्व होगा। जिससे प्रत्येक व्यक्ति उसकी वास्तविक स्वतंत्रता का उपभोग कर सकेगा।

5. विकेन्द्रीकरण और ग्रामराज इसकी प्रमुख देन कही जा सकती है जो कि प्रत्येक व्यक्ति में पंचायती राजव्यवस्था द्वारा क्रियान्वित करने की कोशिश की जा रही है।

6. पाश्चात्य विचारधाराओं मुख्यतः मार्क्सवाद, उपयोगितावाद (बेन्थम) और बहुसंख्यावाद के सामने गाँधी ने एक ऐसी अवधारणा को स्थापित किया जिसने इन भौतिकवादी विचारधाराओं को फीका कर दिया और वे महत्वहीन बन गयी क्योंकि मार्क्स सिर्फ सर्वाहारा वर्ग की भलाई चाहता है, बेन्थम अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख की बात करता है जबकि गांधी इनके विपरीत सबके सुख की बात करते हैं जो भौतिक सुख न होकर आत्मिक सुख है जो वास्तव में कल्याण है।

इस प्रकार सर्वोदय का उद्देश्य सत्य और अहिंसा के आधार पर एक ऐसे आदर्श समाज की रचना करना है जिसमें जात पांत धर्म या ऊँच–नीच का बिल्कुल भेदभाव न होगा शोषण की थोड़ी सी भी गुंजाइश न होगी। सबके साथ न्याय और समता का व्यवहार होगा। जिसमें व्यक्ति और संस्थाओं के विकास के लिए पूरा–पूरा अवसर होगा। आचार्य विनोबा के शब्दों में ''हमें सारा समाज ही बदलना है और वह अहिंसक क्रांन्ति द्वारा ही बदलना है। ऐसा समाज वर्गविहीन शोषणहीन और भेदभावहीन अर्थात वह एकरस समाज होगा जो भूमि के आधार पर खड़ा होगा।''[19]

Lecturer
Department pf History
S. S. Jain Subodh PG (Autonomous College), Jaipur

सन्दर्भ टिप्पणियाँ

1. मो. क. गाँधी : सत्य के प्रयोग (आत्मकथा), नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, पुनमुद्रित, जून 2001, पृ.सं. 259.
2. दादा धर्माधिकारी : सर्वोदय दर्शन, सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट वाराणसी, 1979, पृ.सं. 17.
3. B. Kumarappa : Sarvodaya (Editorial Note P.III)
4. नोट 1, पृ.सं. 259.
5. डॉ. कमला द्विवेदी : गांधी जी का शिक्षा दर्शन, पृ.सं. 86.
6. नोट 5, पृ.सं. 80
7. वी. शीन : महात्मा गाँधी, पृ.सं. 58.
8. एम. के. गाँधी : अमृत बाजार पत्रिका।
9. एम. के. गाँधी : धर्मनीति (मंगल प्रभात), सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1997, पृ.सं. 93.
10. नोट 9, पृ.सं. 102.
11. नोट 10, पृ.सं. 114.
12. रोमा रोलां : महात्मा गाँधी : जीवन और दर्शन (अनुवादित द्वारा प्रफुल्ल चन्द्र ओझा), पृ.सं. 51.
13. जयप्रकाश नारायण : ए पिक्चर ऑफ सर्वोदय सोशल ऑर्डर (वी.पी. वर्मा : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन से उद्धृत पृ.सं. 572. (लक्ष्मीनारायण अग्रवाल–आगरा, 1983)।
14. जनार्दन पाण्डेय : सर्वोदय का राजनीति दर्शन, जानकी प्रकाशन, दिल्ली, 1986, पृ.सं. 77.
15. नोट 18, पृ.सं. 78. (मार्क्सवाद का अन्तिम लक्ष्य भी यही रहा है।)
16. नोट 17
17. गाँधी जी के द्वारा वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त का खण्डन करने का यह मतलब नहीं है कि वे जमींदारी प्रथा के समर्थक थे। नेतृत्व के प्रारम्भिक दिनों में वे इसे जरूर बनाये रखना चाहते थे किन्तु बाद में अपने विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन करते हुए उन्होंने ऐसी समाज व्यवस्था की बात की जो कि सभी वर्ग भेदों से मुक्त हो।
18. नोट 17, वही पृ.सं. 580.
19. हरिजन, जुलाई, 6, 1947.